अध्याय 4: कैमरे में बंद अपाहिज

विषय-सूची 2 प्रश्नावली · 6 प्रश्न

प्रश्नावली 4.1	कविता के साथ	5 प्रश्न
प्रश्नावली 4.2	कविता के आसपास	1 प्रश्न

प्रश्नावली 4.1 — कविता के साथ

प्रश्न 1

कविता में कुछ पंक्तियाँ कोष्ठकों में रखी गई हैं—आपकी समझ से इसका क्या औचित्य है?

हल

कविता में कोष्ठकों में रखी गई पंक्तियाँ कार्यक्रम के निर्देशकों/संचालकों के मन के भीतर चल रही बातों को दर्शाती हैं।

ये वे विचार और निर्देश हैं जो दर्शकों को सुनाई नहीं देते, किंतु स्टूडियो में उपस्थित लोग आपस में कहते हैं।

उदाहरण के लिए: '(कैमरा दिखाओ इसे बड़ा बड़ा)', '(हम खुद इशारे से बताएँगे कि क्या ऐसा?)', '(यह अवसर खो देंगे?)', '(यह प्रश्न पूछा नहीं जाएगा)' — ये सब वे 'पर्दे के पीछे' की बातें हैं।

इस प्रकार कोष्ठकों के माध्यम से कवि ने कार्यक्रम के बाहरी संवेदनशील रूप और भीतरी व्यावसायिक क्रूरता के बीच के अंतर को उजागर किया है।

कोष्ठकों में रखी पंक्तियाँ यह बताती हैं कि कार्यक्रम का असली उद्देश्य अपाहिज की पीड़ा को उभारकर दर्शकों को भावनात्मक रूप से उत्तेजित करना और कार्यक्रम को रोचक बनाना है — करुणा दिखाना नहीं।

यह काव्यशिल्प की दृष्टि से भी अनूठा प्रयोग है — नाटकीयता (dramatic irony) का सृजन करता है।

उत्तर: कोष्ठकों में रखी पंक्तियाँ कार्यक्रम के निर्देशकों के मन के भीतर चल रही बातें हैं — वे निर्देश और विचार जो दर्शकों को नहीं सुनाई देते। इससे कवि ने कार्यक्रम के बाहरी संवेदनशील रूप और भीतरी व्यावसायिक क्रूरता के बीच का अंतर उभारा है।

प्रश्न 2

कैमरे में बंद अपाहिज करुणा के मुखौटे में छिपी क्रूरता की कविता है—विचार कीजिए।

हल

यह कथन बिल्कुल सटीक है।

कविता में एक टेलीविजन कार्यक्रम दिखाया गया है जो 'सामाजिक उद्देश्य से युक्त' होने का दावा करता है और एक अपाहिज व्यक्ति की पीड़ा को दर्शाने का मुखौटा पहनता है।

करुणा का मुखौटा: कार्यक्रम का बाहरी उद्देश्य अपाहिज की पीड़ा को समाज तक पहुँचाना और दर्शकों में संवेदना जगाना प्रतीत होता है।

भीतरी क्रूरता: वास्तव में संचालक उस व्यक्ति से बार-बार प्रश्न पूछकर, कैमरे में उसका दुख बड़ा दिखाकर और उसे रुलाने का प्रयास करके उसकी पीड़ा का 'व्यावसायिक उपयोग' कर रहे हैं।

पंक्तियाँ 'हम पूछ-पूछकर उसको रुला देंगे' और 'इंतजार करते हैं आप भी उसके रो पड़ने का' — यह दर्शाती हैं कि लक्ष्य करुणा जगाना नहीं, बल्कि दर्शकों को भावनात्मक रूप से उत्तेजित करके कार्यक्रम 'रोचक' बनाना है।

'परदे पर वक्त की कीमत है' — यह पंक्ति स्पष्ट करती है कि कार्यक्रम में मनुष्य की पीड़ा से नहीं, व्यावसायिक समय-मूल्य से चिंता है।

अंत में 'अब मुसकुराएँगे हम' कहकर कवि यह दर्शाता है कि संचालक इस सबसे निर्लिप्त हैं — अपाहिज की पीड़ा उनके लिए केवल एक उत्पाद था।

इस प्रकार यह कविता करुणा का दिखावा करने वाले मीडिया की क्रूर व्यावसायिकता पर गहरी व्यंग्यात्मक टिप्पणी है।

उत्तर: यह कविता करुणा के मुखौटे में छिपी क्रूरता की कविता है। कार्यक्रम बाहर से अपाहिज की पीड़ा को समाज तक पहुँचाने का नाटक करता है, किंतु भीतर से 'उसे रुला देने', 'फूली हुई आँख की बड़ी तसवीर दिखाने' और 'वक्त की कीमत' के व्यावसायिक दबाव में काम करता है। अपाहिज की पीड़ा यहाँ मानवीय संवेदना नहीं, टीआरपी का साधन है।

प्रश्न 3

'हम समर्थ शक्तिवान' और 'हम एक दुर्बल को लाएँगे' पंक्ति के माध्यम से कवि ने क्या व्यंग्य किया है?

हल

इन दो पंक्तियों में कवि ने शक्तिशाली मीडिया और असहाय अपाहिज के बीच की असमान शक्ति-संरचना पर गहरा व्यंग्य किया है।

'हम समर्थ शक्तिवान' — यह टेलीविजन कार्यक्रम के संचालकों का आत्म-घोषित श्रेष्ठत्व है। वे संसाधन-संपन्न, मंच के स्वामी और जनमानस को प्रभावित करने वाले हैं।

'हम एक दुर्बल को लाएँगे' — यहाँ अपाहिज को केवल 'दुर्बल' की संज्ञा देकर उसे एक वस्तु की तरह 'लाने' की बात की गई है — मानो वह कोई प्रदर्शनी की चीज़ हो।

व्यंग्य यह है: जो स्वयं को समर्थ कहते हैं, वे अपनी शक्ति का उपयोग किसी दुर्बल की मदद के लिए नहीं, बल्कि उसकी पीड़ा का प्रदर्शन करके अपने कार्यक्रम को रोचक बनाने के लिए कर रहे हैं।

कवि ने 'समर्थ' बनाम 'दुर्बल' के इस विरोध के माध्यम से यह दिखाया है कि ताकतवर वर्ग कमज़ोर की पीड़ा को 'बेचता' है।

यह व्यंग्य मीडिया की नैतिकता पर और उस सामाजिक ढाँचे पर भी है जहाँ 'करुणा' भी एक वस्तु बन जाती है।

उत्तर: कवि ने व्यंग्य किया है कि जो स्वयं को 'समर्थ शक्तिवान' कहते हैं, वे एक 'दुर्बल' को लाकर उसकी पीड़ा का प्रदर्शन करते हैं — मदद के लिए नहीं, बल्कि कार्यक्रम को रोचक बनाने के लिए। यह ताकतवर मीडिया द्वारा कमज़ोर की पीड़ा के व्यावसायिक दोहन पर तीखा व्यंग्य है।

प्रश्न 4

यदि शारीरिक रूप से चुनौती का सामना कर रहे व्यक्ति और दर्शक, दोनों एक साथ रोने लगेंगे, तो उससे प्रश्नकर्ता का कौन-सा उद्देश्य पूरा होगा?

हल

कविता में प्रश्नकर्ता (कार्यक्रम का संचालक) का उद्देश्य अपाहिज को रुलाना और दर्शकों को भावनात्मक रूप से उद्वेलित करना है।
यदि दोनों — अपाहिज और दर्शक — एक साथ रो पड़ें, तो इससे प्रश्नकर्ता के निम्नलिखित उद्देश्य पूरे होंगे:
पहला उद्देश्य: कार्यक्रम 'रोचक' और 'भावनात्मक रूप से प्रभावशाली' बनाना — यही टेलीविजन का TRP बढ़ाने का तरीका है।
दूसरा उद्देश्य: 'सामाजिक उद्देश्य से युक्त कार्यक्रम' का दावा सिद्ध करना — दर्शकों का रोना यह 'प्रमाणित' करेगा कि कार्यक्रम ने संवेदना जगाई।
तीसरा उद्देश्य: अपाहिज की पीड़ा को 'बेच' कर अपनी पहुँच और प्रभाव बढ़ाना।
कवि इसीलिए पंक्ति लिखता है — 'हमें दोनों एक संग रुलाने हैं' — यह प्रश्नकर्ता का असली लक्ष्य है।
किंतु व्यंग्य यह है कि यह 'संवेदना' असली नहीं, प्रायोजित है — एक व्यावसायिक चाल जिसमें अपाहिज केवल माध्यम है।

उत्तर: यदि दोनों एक साथ रो पड़ें तो प्रश्नकर्ता का उद्देश्य पूरा होगा — कार्यक्रम 'भावनात्मक रूप से सफल' और 'रोचक' बन जाएगा, TRP बढ़ेगा, और 'सामाजिक उद्देश्य से युक्त' होने का दावा सिद्ध होगा। किंतु यह प्रायोजित संवेदना है — अपाहिज की पीड़ा को बेचकर व्यावसायिक सफलता पाना ही वास्तविक लक्ष्य है।

प्रश्न 5

'परदे पर वक्त की कीमत है' कहकर कवि ने पूरे साक्षात्कार के प्रति अपना नजरिया किस रूप में रखा है?

हल

यह पंक्ति कविता के अंत के निकट आती है, जब कार्यक्रम बिना सफलता के समाप्त होने लगता है — '(कैमरा / बस करो / नहीं हुआ / रहने दो / परदे पर वक्त की कीमत है)'।
इस पंक्ति के माध्यम से कवि ने पूरे साक्षात्कार के प्रति अपना नजरिया व्यंग्यात्मक रूप से स्पष्ट किया है।
टेलीविजन के लिए 'वक्त की कीमत' (airtime का मूल्य) सर्वोच्च है — अपाहिज की पीड़ा, उसकी भावनाएँ, उसका समय नहीं।
जब अपाहिज 'ठीक से' नहीं रो पाया, 'ठीक से' दुख नहीं दिखा पाया — तो उसे बीच में ही 'बस करो' कहकर रोक दिया गया।
कवि का नजरिया: यह साक्षात्कार वास्तव में अपाहिज के प्रति संवेदना का प्रयास नहीं था, बल्कि उसकी पीड़ा का व्यावसायिक शोषण था। जैसे ही वह व्यावसायिक उद्देश्य पूरा न हो सका, अपाहिज को 'रहने दो' कह दिया गया।
'परदे पर वक्त की कीमत' — यह प्रतीक है उस पूरी व्यवस्था का जो मनुष्य की पीड़ा को भी 'समय-मूल्य' के तराजू पर तौलती है।
इस प्रकार कवि का नजरिया यह है कि मीडिया का यह साक्षात्कार मानवीय संवेदनहीनता और पीड़ा के व्यावसायीकरण का प्रतीक है।

उत्तर: 'परदे पर वक्त की कीमत है' कहकर कवि ने स्पष्ट किया है कि यह साक्षात्कार मानवीय संवेदना का नहीं, व्यावसायिक कार्यक्रम का हिस्सा था। जब अपाहिज उनकी अपेक्षा के अनुसार प्रतिक्रिया न दे सका, उसे बीच में छोड़ दिया गया — क्योंकि स्क्रीन का समय मनुष्य की पीड़ा से अधिक मूल्यवान है। यह पूरी साक्षात्कार की क्रूर व्यावसायिकता को उजागर करता है।

प्रश्नावली 4.2 — कविता के आसपास

प्रश्न 1

सामाजिक उद्देश्य से युक्त ऐसे कार्यक्रम को देखकर आपको कैसा लगेगा? अपने विचार संक्षेप में लिखें।

हल

ऐसे 'सामाजिक उद्देश्य' का दावा करने वाले कार्यक्रम को देखकर एक संवेदनशील दर्शक के मन में विरोधाभासी भावनाएँ उठती हैं।

पहली प्रतिक्रिया: दुख और क्रोध — जब यह स्पष्ट हो कि कार्यक्रम वास्तव में अपाहिज की पीड़ा को प्रदर्शित कर रोचकता बना रहा है, तो यह मानवीय गरिमा का अपमान लगता है।

दूसरी भावना: असहायता — अपाहिज व्यक्ति से ऐसे प्रश्न पूछे जा रहे हैं जो उसे भावनात्मक रूप से तोड़ते हैं, और वह कुछ नहीं कर सकता।

तीसरी भावना: मीडिया के प्रति अविश्वास — जो माध्यम संवेदना जगाने का दावा करता है, वह स्वयं संवेदनहीन है।

ऐसे कार्यक्रम देखकर लगता है कि शारीरिक चुनौती झेलते लोगों को सहानुभूति और सम्मान की ज़रूरत है, करुणा के नाम पर तमाशे की नहीं।

समाज को चाहिए कि ऐसे कार्यक्रमों की माँग करे जो वास्तव में दिव्यांग जनों की क्षमता, उपलब्धि और आत्मसम्मान को दर्शाएँ।

उत्तर: ऐसा कार्यक्रम देखकर दुख, क्रोध और असहायता का अनुभव होगा। जो कार्यक्रम सामाजिक उद्देश्य का दावा करके किसी अपाहिज की पीड़ा का प्रदर्शन करे, वह वास्तव में मानवीय गरिमा का उल्लंघन है। दिव्यांग जनों को सहानुभूति और सम्मान चाहिए — तमाशा नहीं।